Dr. Sangita Kumari Saha
B.A D-I(H) 1st Paper.

## Attention process.

व्यक्ति अपने आस-पास के वातावरण में अनेक प्रकार की उत्तेजनाओं से घिरा रहता है। परन्तु हर एक उत्तेजना उसके प्रत्यक्षज्ञान की परिधि में नहीं रहती। उपस्थित उत्तेजनाओं में से कुछ उत्तेजनाएँ उसकी सचेतावस्था में रहती हैं जिनका प्रत्यक्षीकरण सुस्पष्ट होता है जबकि कुछ का प्रत्यक्षीकरण धुँधला होता है। और शेष सभी उत्तेजनाएँ सचेतावस्था की सीमा से बाहर पीछे ही रहती हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि उपस्थित अनेकानेक उत्तेजनाओं या घटनाओं में से कुछ ही उत्तेजनाओं पर हमारा ध्यान जाता है जिनका प्रत्यक्षज्ञान सुस्पष्ट होता है। अवधान प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया का आधार है।

अवधान की प्रक्रिया हमारे मानसिक अनुभवों के क्षेत्र को अवधान केन्द्र एवं अवधान के सीमान्त क्षेत्रों में विभाजित कर देता है। अतः जो उत्तेजना या घटना अवधान केन्द्र पर पड़ती है उसका प्रत्यक्षीकरण clear figure के रूप पृष्ठभूमि के ऊपर उठा हुआ सुगठित रूप का प्रतीत होता है परन्तु अवधान केन्द्र से बाहर Margin of attention में जो उत्तेजना रहती है उसका अनुभव धुँधला अस्पष्ट तथा छायाकृति रूप में होता है।

अवधान की प्रक्रिया की दूसरी विशेषता यह होती है कि अवधान में विचलन भी होता है। किसी क्षण विशेष में कोई उत्तेजना हमारे अवधान केन्द्र में रहती है तो दूसरे क्षण में वह उत्तेजना अवधान के सीमान्त में चला जाता है और सीमान्त वाली उत्तेजना अवधान केन्द्र में चला आता है।

उदाहरण स्वरूप किसी खेल के मैदान में जब कोई खेल चलता रहता है उस समय दर्शक दीर्घा में बैठे व्यक्ति का ध्यान खिलाड़ियों की गतिविधियों पर ही केन्द्रित रहता है जबकि शून्य उत्तेजना जैसे बगल में बैठे व्यक्ति के सिगरेट का धुआँ व्यक्ति विशेष का एक ही जगह में बैठे रहने के कारण पैर में दर्द की अनुभूति आदि अवधान केन्द्र से बाहर सीमान्त में रहने के कारण उनका चेतनागत नहीं हो पाता है लेकिन जैसे ही खेल समाप्त होता है अथवा मध्यान्तर होता है दर्शक का ध्यान खेल की गतिविधि से हटकर दूसरी उत्तेजनाओं

Scanned with CamScanner

सिगरेट का धुआँ या पैर में दर्द का अनुभव पर चला जाता है। इसप्रकार जो अवधान केन्द्र में था वह सीमान्त में और जो सीमान्त में था वह केन्द्र में स्थानांतर होता रहता है।

इसके अतिरिक्त अवधान के स्वरूप में और भी कई विशेषताएँ हैं जैसे

(a) Selectivity
(b) division
(c) readiness
(d) body postural adjustment
(e) limitations of span of attention आदि

अवधान प्रक्रिया की इन विशेषताओं का प्रत्यक्षीकरण से गहरा संबंध है। इनके बीच के घनिष्ठ संबंधों के कारण अवधान एवं प्रत्यक्षीकरण से गहरा संबंध है। इनके बीच के घनिष्ठ संबंधों के कारण अवधान एवं प्रत्यक्षीकरण के बीच अंतर स्पष्ट करना भी मुश्किल होता है।

—x—